प्रथम अध्यक्षता और भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, मई 2013

प्रथम अध्यक्षता संदेश, मई 2013

आज्ञाकारिता आशीषें लाती है

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

सच का ज्ञान और हमारे सबसे बड़े सवालों के जवाब हमें तब मिलते हैं जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं के

प्रति आज्ञाकारी रहते हैं ।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, आज सुबह आपके साथ होने पर मैं बहुत आभारी हूं । आपका संबोधन करते समय मैं आपके विश्वास और प्रार्थना में रूचि चाहता हूं ।

सारे युगों से, पुरूषों और महिलाओं ने इस नश्वर अस्तित्व के संबंध में ज्ञान और समझ को पाने और इसमें उनकी भूमिका और उद्देश्य को जानने का प्रयास किया है, इसके साथ-साथ उन्होंने शांति और सुख के मार्ग को भी चाहा है । यह खोज हम में से प्रत्येक करता है ।

यह ज्ञान और समझ संपूर्ण मानवजाति को उपलब्ध है । ये उन सच्चाइयों में हैं जो अनंत हैं । सिद्धांत और अनुबंध के, खंड 1, आयत 39 में हम पढ़ते हैंः ''देखो, प्रभु परमेश्वर है, और आत्मा गवाही देती है, और गवाही सच्ची है, और यह सच हमेशा हमेशा के लिए कायम रहता है ।''

एक कवि ने लिखा थाः

भले आकाश टल जाए और पृथ्वी का दरिया फट जाए,
सच, जीवन का सार, सबका सामना करेगा,
अनंत, अपरिवर्तित, हमेशा हमेशा के लिए ।1

कुछ पूछेंगेः ''यह सच कहां मिलता है, और हम कैसे इसे पहचानेंगे ?'' भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को किर्टलैंड, ओहायो में दिये प्रकटीकरण के द्वारा प्रभु ने कहा थाः सच उन बातों का ज्ञान है जैसी वे हैं, और जैसी वे थी, और वे आने वाले समय में वैसी रहेंगी । ... ''सच की आत्मा परमेश्वर की है । ... ''और कोई भी मनुष्य उसकी आज्ञाओं पालन किये बिना पूर्णता नहीं पा सकता । ''वह जो [परमेश्वर] की आज्ञाओं का पालन करता है सच और ज्ञान को प्राप्त करता रहता है, जब तक वह सच में गौरवान्वित रहता और सब बातों को जानता है ।''2

कितना आनंददायक वादा है । ''वह जो [परमेश्वर] की आज्ञाओं का पालन करता है सच और ज्ञान को प्राप्त करता रहता है, जब तक वह सच में गौरवान्वित रहता और सब बातों को जानता है ।''

इस प्रबुद्ध युग में जबकि सुसमाचार की पूर्णता को पुनास्थापित किया जा चुका, सच्चाई की खोज में आपके लिए या मेरे लिए अनजाने सागर में जाने या अनजाने मार्ग में यात्रा करने की आवश्यकता नहीं । एक प्रेमी स्वर्गीय पिता ने हमारी यात्रा का मार्ग तैयार किया और अचूक मार्गदर्शन--- *आज्ञाकारिता* को उपलब्ध कराया है । सच का ज्ञान और हमारे सबसे बड़े सवालों के जवाब हमें तब मिलते हैं जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी रहते हैं ।

हम अपने जीवन भर आज्ञाकारिता सीखते रहते हैं । जब हम बहुत छोटे थे तब से आरंभ करके, जिन पर हमारी देखभाल की जिम्मेदारी थी, उन्होंने हमारी सुरक्षा के लिए दिशा-निर्देश और नियम तय किए थे । जीवन हम सब के लिए सरल हो जाएगा यदि हम ऐसे नियमों का पूरी तरह पालन करते हैं । हालांकि हम से बहुत से लोग, अनुभव के द्वारा आज्ञाकारी होने की समझ पाते हैं । जब मैं बालक था, हर गरमी में जुलाई से सिंतबर तक, मेरा परिवार यूटाह, प्रोवो कैनियन में विविन पार्क पर हमारे घर में रहने जाता था ।कैनियन में उन चिंतामुक्त दिनों के मेरे अच्छे मित्रों में एक डैनी लारसन था, जिसके परिवार के पास भी विविन पार्क में एक घर था । हर दिन वह और मैं लड़कों के स्वर्ग में घुमा करते थे, धारा और नदी में मछली पकड़ते, पत्थर और दूसरे खजाने इकट्ठा करते, पैदल घुमते, चढ़ाई चढ़ते, यानि हर दिन हर घंटे हर क्षण का आनंद लेते ।

एक सुबह डैनी और मैंने निर्णय लिया कि हम सब कैनियन के मित्र उस शाम कैंप-फायर करेंगे । हमें केवल नजदीक के मैदान में एक जगह साफ करनी थी जहां हम सब इकट्ठा हो सकें । जून घास जिसने मैदान को ढका हुआ था सूखी और चुभनभरी थी, घास के कारण यह मैदान हमारी कैंप-फायर के लिए उपयुक्त न था । इसलिए हमने ऊंची-ऊंची घास को हाथों उखाड़ना शुरू किया, काफी बड़े क्षेत्र को गोलाकार में साफ करने की हमारी योजना थी । हमने अपनी पूरी ताकत से खींचा और जोर लगाया, लेकिन हम केवल कुछ मुट्ठीभर घासपात ही उखाड़ पाये थे । हम जान गए थे इसे साफ करने में पूरा दिन लग जाएगा, और हमारी ताकत और जोश अभी से ठंडा पड़ने लगा था ।

और तभी मेरे आठ-वर्ष-के-दिमाग में एक विचार आया जिसे मैं बहुत उत्तम उपाया सोचा था । मैंने डैनी से कहा, ''हमें कुछ करने की जरूरत नहीं बस इस घास में आग लगा देते हैं । हम केवल घास को गोलाकार में आग लगा देगें !'' वह तुरन्त तैयार हो गया, और मैं अपने घर की ओर माचिस लेने दौड़ा ।

कहीं आप में से कोई यह न सोचे कि आठ वर्ष की इतनी कम आयु में हमें माचिस का उपयोग करने की अनुमति थी, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि डैनी और मुझे दोनों को माचिस का उपयोग केवल बड़ों की देखरेख में करने की आज्ञा थी । हम दोनों को कई बार आग के खतरों से सावधान किया गया था । हालांकि मैं जानता था कि मेरा परिवार माचिस कहां रखता था, और हमें उस मैदान को साफ करना था । बिना दुबारा सोचे, मैं अपने घर की ओर दौड़ा और कुछ माचिस की तिल्लियां निकाल लीं, होशियारी से कि कहीं कोई देख न ले । मैंने तुरन्त इन्हें अपनी जेब में डाल लिया ।

मैं डैनी की ओर वापस भागा, बहुत खुश था कि मेरी जेब में हमारी समस्या का उपाय था । मुझे याद है मैं सोच रहा था कि आग केवल उतनी ही घास जलाएगी जितनी हम चाहते थे और उसके बाद यह जादू से अपने आप बुझ जाएगी ।

मैंने माचिस को पत्थर पर रगड़ा और सूखी जून घास में आग लगा दी । यह इतनी तेजी से जलने लगी मानो यह मिट्टी तेल में भीगी हो । पहले-पहले डैनी और मैं बहुत खुश हुए जब हम घास को भस्म होते देख रहे थे, लेकिन जल्द ही हमें पता चल गया कि आग अपने आप बुझने वाली नहीं थी ।

हम घबरा गये क्योंकि हम इसे बुझाने के लिए कुछ नहीं कर सकते थे । धधकती हुई आग की लपटें ऊपर पहाड़ की ओर जंगली घास की तरफ जाने लगी, चीड़ के पेड़ और जो कुछ इसके रास्ते में था खतरे में पड़ गये ।

अतंतः हमारे पास कोई विकल्प नहीं था सिवाय मदद के लिए भागने के । जल्द ही जितने भी लोग विविन पार्क में थे इधर-उधर दौड़-दौड़ कर गीले टाट से लपटों को मार-मार कर आग बुझाने का प्रयास करने लगे । कई घंटों बाद बचे हुए आंगारों को दबाकर बुझा दिया गया । सालों पुराने चीड़ के पेड़ों और घरों को आग की लपटों से बचा लिए गए थे ।

डैनी और मैंने उस दिन कई लेकिन महत्वपूर्ण सबक सीखे थे---उनमें सबसे महत्वपूर्ण था आज्ञाकारिता ।

जिस तरह हमारी शारीरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नियम और कानून हैं । उसी तरह, प्रभु ने हमारी आत्मिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दिशा-निर्देश और आज्ञाएं दी हैं ताकि आमतौर पर इस जोखिमभरे जीवन में सफलता से हमारा मार्ग-निर्देशन हो सके और हम अंततः अपने स्वर्गीय पिता के पास वापस लौट पाएं ।

सदियों पहले, एक पीढ़ी से जो पशु बलिदान की परंपरा में डूबी थी, शमुएल ने निडरता से कहा था : ''सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है ।''3

इस प्रबंध में, प्रभु ने भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को प्रकट किया था कि उसे केवल ''हृदय और करने वाला मन चाहिए; और करने वाला और आज्ञाकारी इन अंतिम दिनों में सिय्योन प्रदेश में उत्तम पदार्थ पाएगा ।''4

सभी भविष्यवक्ता, प्राचीन और वर्तमान, जानते हैं कि आज्ञाकारिता हमारे उद्धार के लिए महत्वपूर्ण है । नफी ने कहा था, ''मैं जाऊंगा और वह काम करूंगा जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है ।'' जबकि अन्य अपने विश्वास और आज्ञाकारिता में संकोच करते हैं, नफी ने एक बार भी उसे करने से पीछे नहीं हटा जिसे प्रभु ने उसे कहा था । और इसके कारण अगिनत पीढ़ियां आशीषित हुई हैं ।

आत्मा को झंझड़ोने वाला आज्ञाकारिता का वर्णन इब्राहीम और इसाहाक का है । इब्राहीम के लिए कितना कष्टदायी रहा होगा, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना, अपने प्रिय पुत्र को मोरिय्याह प्रदेश ले जाकर उसकी बलि चढ़ाना । क्या हम इब्राहीम के हृदय के दुख की कल्पना कर सकते हैं जब वह उस बताए गए स्थान को जा रहा था ? अवश्य ही पीड़ा ने उसके शरीर को तोड़ डाला होगा और उसके मन को आहत किया होगा जब उसने इसाहाक को बांधा, वेदी पर लेटाया, और मारने के लिए चाकू उठाया था । प्रभु में अडिग विश्वास और पूरे भरोसे के साथ, उसने प्रभु के आदेश को माना था । कितनी आनंददायी थी यह घोषणा, और कितने आश्चर्यजनक स्वागत के साथ यह आई थी : ''लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर : क्योंकि

तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है ।''6

इब्राहीम की जांच और परिक्षा की गई थी, और उसकी इस विश्वसनीयता और आज्ञाकारिता के कारण प्रभु उसके साथ यह अदभुत प्रतिज्ञा बनाई थीः ''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगीः क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है ।' '7

यद्यपि हमारी अपनी आज्ञाकारिता को साबित करने के लिए इतनी कठिन और हृदय-विदारक तरीके से जांच नहीं की जाती, फिर भी आज्ञाकारिता की हम सबों से अपेक्षा की जाती है ।

अक्टूबर 1873 में भविष्यवक्ता जोसफ एफ. स्मिथ ने कहा था, ''आज्ञाकारिता स्वर्ग का सर्वप्रथम नियम है ।''8

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था, ''अंतिम-दिनों के संतों का सुख, अंतिम-दिनों के संतों की शांति, अंतिम-दिनों के संतों की उन्नति, अंतिम-दिनों के संतों की संपन्नता, और इन लोगों का अनंत उद्धार और उत्कृष परमेश्वर की सलाहों पर आज्ञाकारिता से चलने पर निर्भर होता है ।''9

आज्ञाकारिता भविष्यवक्ताओं की विशेषता है; इसने इन्हें युगों से शक्ति और ज्ञान प्रदान किया है । हमारे लिए यह समझना आवश्यक है, कि हम भी उसी शक्ति और ज्ञान के स्रोत के अधिकारी हैं । ये हमें से हर एक को आसानी से उपलब्ध हो सकता है यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं ।

सालों से मैं उन अगिनत लोगों को जानता हूं जो विशेषरूप से विश्वसनीय और आज्ञाकारी रहे हैं । मैं उनके द्वारा आशीषित और प्रेरित हुआ हूं । मैं ऐसे दो व्यक्तियों का वर्णन करना चाहता हूं । वाल्टर क्रॉउस गिरजे का वफादार सदस्य था जो, अपने परिवार के साथ, उस स्थान पर रहता था जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी जर्मनी कहलाता था । उस समय उस क्षेत्र में स्वतंत्रता की कमी के कारण कष्टों सहने के बावजूद, भाई क्रॉउस एक ऐसा इंसान था जो प्रभु से प्रेम और उसकी सेवा करता था । वह विश्व सनीयता और निष्ठापूर्वक उन कामों करता था जो उसे दिये जाते थे ।

दूसरा व्यक्ति, योहान डेनडोरफर, हंगरी का नागरिक था, जो जर्मनी में गिरजे का परिवर्तित बना और उसका 1911 में 17 वर्ष की आयु में बपतिस्मा हुआ था । द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात, उसने अपने आपको अपने ही देश, डेब्रसेन शहर में एक कैदी था । हंगरी के लोगों की स्वतंत्रता छीन ली गई थी ।

भाई वाल्टर क्रॉउस, जोकि भाई डेनडोरफर को नहीं जानता था, को उसके घर के शिक्षक और उससे नियमित भेंट करने की जिम्मेदारी दी गई । भाई क्रॉउस ने अपने घर के शिक्षक साथी को फोन किया और कहा, ''हमें भाई योहान डेनडोरफर से भेंट करने की जिम्मेदारी दी गई है । क्या आप इस हफ्ते मेरे साथ उससे मिलने और उसे सुसमाचार संदेश देने चलोगे ?'' और उसने यह भी कहा, ''भाई डेनडोरफर हंगरी में रहता है ।''उसके हैरान साथी ने पूछा, ''हमें कब जाना होगा ?'' ''कल'', भाई क्रॉउस ने जवाब दिया । ''हम घर कब वापस आएंगे ?'' साथी ने पूछा ।

भाई क्रॉउस ने जवाब दिया, ''ओह, एक हफ्ते में---यदि हम वापस *आए* ।''

दोनों घर के शिक्षक साथी भाई डेनडोरफर से मिलने चल दिए, रेल और बस से उतरपश्चिम जर्मनी से डेब्रासन, हंगरी---काफी लंबी यात्रा है । भाई डेनडोरफर का युद्ध के पहले से कोई घर का शिक्षक नहीं था । अब जब उसने इन दो प्रभु के सेवकों को देखा, वह कृतज्ञता से भर गया कि वे उससे मिलने आए थे । पहले पहल उसने उनसे हाथ नहीं मिलाया । वह सीधा अपने कमरे में गया और एक छोटा बॉक्स लाया जिसमें उसने अपना दसमांश रखा था जिसे उसने कई सालों में जमा किया था । उसने अपने घर के शिक्षकों को दसमांश दे दिया और कहा, ''अब प्रभु के साथ मेरा लेनदेन बराबर हो गया है । अब मैं अपने आपको प्रभु के सेवकों के साथ हाथ मिलाने के योग्य महसूस करता हूं !'' भाई क्रॉउस ने मुझे बाद में बताया कि वह इस विश्वासी भाई से अत्याधिक प्रभावित हुआ था, जो कई सालों तक गिरजे के संपर्क में नहीं था, फिर भी आज्ञाकारिता से और नियमितरूप से अपनी बहुत कम आय का दस प्रतिशत दसमांश के रूप में रखता आया था । उसने इसे बचाया उसे मालूम नहीं था कब या कभी इसे देने का सौभाग्य भी उसे मिलेगा ।

भाई वाल्टर क्रॉउस नौ वर्ष पूर्व 94 वर्ष की आयु में गुजर गए । उन्होंने विश्वसनीयता और आज्ञाकारिता से अपने पूरे जीवन-भर सेवा की और मेरे लिए और उन सबों के लिए जो उसे जानते थे एक प्रेरणा थे । जब कोई जिम्मेदारी दी गई, उन्होंने कभी प्रश्न नहीं उठाया, कभी शिकायत नहीं की, और कभी बहाने नहीं बनाए ।

मेरे भाइयों और बहनों, इस जीवन की महान परिक्षा आज्ञाकारिता है । ''इससे हम उनकी जांच करेंगे,'' प्रभु ने कहा, ''यह देख ने के लिए कि क्या वे उन सब कामों को करेंगे जिसका आदेश उनका प्रभु परमेश्वर उन्हें देता है ।''10

उद्धारकर्ता ने कहा थाः ''क्योंकि वे सब जो मेरे हाथों से आशीष पाएंगे वह उस नियम का पालन करने से आएंगी जिसके लिए वह आशीष निधार्रित और उससे संबंधित शर्तो पर दी गई थी, जैसा कि इन्हें संसार के आरंभ से स्थापित किया गया था ।''11

आज्ञाकारिता का हमारे उद्धारकर्ता से बड़कर दूसरा कोई उदाहरण नहीं है । जिसके विषय में पौलुस ने कहा थाः

''और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी ।

''और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया ।''12

अपने पवित्र मिश्न का सम्मान करते हुए, उद्धारकर्ता ने परिपूर्ण जीवन जीकर परमेश्वर के वास्तविक प्रेम को प्रदर्शित किया था । उसने कभी भी घमंड नहीं किया । वह अहंकार से कभी नहीं फूला । उसने कभी भी विद्रोह नहीं किया । वह हमेशा विनम्र रहा । वह हमेशा निष्ठावान रहा । वह हमेशा आज्ञाकारी रहा ।

यद्यपि वह धोखेबाजी के गुरू, शैतान, द्वारा लालच में डालने के लिए आत्मा द्वारा निर्जन में ले जाया गया, यद्यपि 40 दिन और 40 रात उपवास के कारण वह भूखा और शारीरिक तौर पर कमजोर था, फिर भी जब शैतान ने यीशु को बहुत लुभावने और लालचभरे प्रस्ताव दिए, उसने उन सबको अस्वीकार करते हुए हमें आज्ञाकारिता का दिव्य उदाहरण दिया ।

जब यातना की गत्समनी का सामना किया, जहां उसने इतना अधिक दर्द सहा कि ''उसका पसीना लहू की बूदों के समान भूमि पर गिर रहा था,''14 उसने यह कहते हुए एक आज्ञाकारी बेटे का उदाहरण दिया, ''पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो ।''15

जैसा उद्धारकर्ता ने अपने आरंभिक प्रेरितों को निर्देश दिया था, वैसे ही वह आपको और मुझे निर्देश देता है : ''तुम मेरे पीछे हो ले ।''16 क्या हम आज्ञा मानने को तैयार हैं ?

वह ज्ञान जिसे हम खोजते हैं, वे जवाब जिससे हम जानना चाहते हैं, और वह शक्ति जो हम आज के कठिन और बदलते संसार की चुनौतियों का सामना करने के लिए पाना चाहते हैं, हमारे हो सकते हैं जब हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना चाहते हैं । मैं एक बार फिर प्रभु के शब्द दोहराना चाहता हूं । ''वह जो [परमेश्वर] की आज्ञाओं का पालन करता है सच और ज्ञान को प्राप्त करता रहता है, जब तक वह सच में गौरवान्वित रहता और सब बातों को जानता है ।''17

यह मेरी विनम्र प्रार्थना है कि हम उन उत्तम उपहारों से आशीषित हों जिनका वादा एक आज्ञाकारी के लिए किया गया । हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

विवरण

1. "Oh Say, What Is Truth?" *Hymns,* no. 272 ।
2. सिद्धांत और अनुबंध 93:24, 26–28 ।
3. 1 शमुएल 15:22 ।
4. सिद्धांत और अनुबंध 64:34 ।
5. 1 नफी 3:7 ।
6. उत्पति 22:12 ।
7. उत्पति 22:18 ।
8. Joseph F. Smith, "Discourse," *Deseret News,* नंव. 12, 1873, 644 ।
9. Gordon B. Hinckley, "If Ye Be Willing and Obedient," *Ensign,* दिसं. 1971, 125 ।
10. इब्राहीम 3:25 ।
11. सिद्धांत और अनुबंध 132:5 ।
12. इब्रानियों 5:8–9 ।
13. See Matthew 4:1–11.
14. लूका 22:44 ।
15. लूका 22:42 ।
16. यूहन्ना 21:22 ।
17. सिद्धांत और अनुबंध 93:28 ।

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/12 । अनुवाद अनुमतिः 6/12 । 10665 294 का अनुवाद

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

प्रत्येक माह के चौथे रविवार पर मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था सभाएं, ''हमारे समय के लिए शिक्षाएं'' के लिए समर्पित रहना जारी रहेंगी । प्रत्येक पाठ हाल के महा सम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं में से तैयार किया जा सकता है (नीचे चार्ट देखें) । स्टेक और जिला अध्यक्ष उन वार्ताओं का चयन कर सकते हैं जिनका उपयोग किया जाना है, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्षों और शाखा अध्यक्षों को दे सकते हैं । मार्गदर्शकों को मलकिसिदक पौरोहित्य भाइयों और सहायता संस्था बहनों को एक ही वार्ता का अध्ययन एक ही रविवार को अध्ययन करने की उपयोगिता पर जोर देना चाहिए ।
वे जो चौथे-रविवार पाठ में उपस्थित होते हैं उनसे कक्षा में हाल की महा सम्मेलन पत्रिका की प्रति लाने के लिए उत्साहित किया जाता है । वार्ताओं से पाठ तैयार करने के लिए सुझाव
प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा वार्ता(ओं) का अध्ययन करते और सीखाते समय आपके साथ होगी । पाठ की तैयारी करते समय आपके मन में अन्य सामग्रियों का उपयोग करने का विचार आएगा, लेकिन सम्मेलन वार्ताएं ही स्वीकृत पाठयक्रम हैं । आपका कार्यभार गिरजे की हाल के महा सम्मेलन में सीखाए सुसमाचार को सीखने और जीने में दूसरों की मदद करना है ।
वार्ता(ओं) की समीक्षा करें, उन नियमों और सिद्धांतों की खोज करें जो कक्षा के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करती है । कहानियों , धर्मशास्त्र संदर्भो, और वार्ताओं के कथनों की खोज करें जो आपको इन सच्चाइयों को सीखाने में मदद करेंगे ।
नियमों और सिद्धांतों को सीखाने के लिए एक रूप-रेखा बनाएं । आपकी रूप-रेखा में वे प्रश्न शामिल होने चाहिए जो कक्षा के सदस्यों की मदद करेंगे : वार्ता(ओं) में नियमों और सिद्धांतों की खोज करें । उनके अर्थ के बारे में विचार करें ।
समझ, विचार, अनुभवों, और गवाहियों को बांटे । इन नियमों और सिद्धांतों को उनके जीवन में लागू करें ।
महिने पाठ सीखाए जाते हैं
चौथा-रविवार पाठ सामग्री
अप्रैल 2013- अक्टूबर 2013
अप्रैल 2013 महा सम्मेलन में दी गई वार्ताएं *
अक्टूबर 2013-- अप्रैल 2014
अक्टूबर 2013 महा सम्मेलन में दी गई वार्ताएं *
अप्रैल और अक्टबूर के चौथे रविवार पाठों के लिए, वार्ता(एं) पिछली या हाल ही में हुई महा सम्मेलन से चुनी जा सकती हैं । वार्ताएं कई भाषाओं में conference.lds.org पर उपलब्ध हैं ।

भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, मई 2013

''मेरे पास आओ''

अध्यक्ष हेनरी बी. आएरिंग द्वारा

प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

उसके शब्दों और उसके उदाहरण द्वारा, मसीह ने हमें दिखाया है कैसे उसके निकट आना है ।

मैं आपके साथ अंतिम-दिनों के संतों का यीशु मसीह के गिरजे के सम्मेलन में शामिल होने के लिए आभारी हूं । यह उसका गिरजा है । हम अपने ऊपर उसका नाम धारण करते हैं जब हम उसके राज्य में प्रवेश करते हैं । वह एक परमेश्वर, सृष्टिकृता, और परिपूर्ण है । हम मृत्यु और पाप के अधीन नश्वर हैं । फिर भी हमारे लिए और हमारे परिवारों के लिए अपने प्रेम में, वह हमें उसके निकट आने का निमंत्रण देता है । उसके शब्द इस प्रकार हैं : ''मेरे पास आओ और मैं तुम्हारे पास आऊंगा; निष्ठा से मुझे पाने का प्रयास करो और तुम मुझे पाओगे; मांगो, और तुम्हें मिलेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जाएगा ।''1

इस ईस्टर के समय हमें याद दिलाया गया, हम क्यों उससे प्रेम करते हैं और उसके वादे को, जो वह अपने विश्वासी शिष्यों को उसके प्रिय मित्र बनने के लिए करता है । उद्धारकर्ता ने उस वादे को किया और हमें बताया कैसे, उसके प्रति हमारी सेवा में, वह हमारे पास आता है । ओलिवर कॉउड्री को एक प्रकटीकरण में जब वह भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के मॉरमन की पुस्तक के अनुवाद में प्रभु की सेवा कर रहा थाः ''देखो, तुम ओलिवर, और तुम्हारी इच्छा के कारण मैंने तुम से बात की है; इसलिए इन शब्दों को अपने हृदय में संजोकर रखो । परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में विश्वसनीय और निष्ठावान रहो, और मैं तुम्हें अपने प्रेम की बांहों के घेरे में ले लूंगा ।''2

आज्ञा पालन के छोटे-छोटे कामों को करके मैंने उसके पास आने और उसका मेरे पास आने के आनंद को महसूस किया है । आपके साथ भी ऐसे अनुभव हुए होंगे । हो सकता है यह तब हुआ हो जब आपने प्रभुभोज सभा जाने का निर्णय लिया था । मेरे साथ यह तब हुआ था जब मैं बहुत छोटा था । उन दिनों हम प्रभुभोज शाम की सभा में लेते थे । 65 साल पहले एक दिन की याद, अभी भी मुझे उद्धारकर्ता के निकट ले जाती है, जब मैंने अपने परिवार और संतों के साथ एकत्रित होने की आज्ञा का पालन किया था ।

उस शाम बाहर अंधेरा और ठंड थी । अपने माता-पिता के साथ चैपल के अंदर प्रकाश और गर्माहट का एहसास मुझे याद है । उसके बेटे को हमेशा याद रखने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अपने अनंत पिता के साथ अनुबंध बनाते हुए हमने हा रूनी पौरोहित्य धारकों द्वारा दिए गए प्रभुभोज में भाग लिया था ।

सभा के अंत में इन शब्दों के साथः ''O Savior, stay this night with me'' हमने स्तुतिगीत ''Abide with Me; 'Tis Eventide'' गया था ।3

उस शाम मैंने उद्धारकर्ता के प्रेम और निकटता को महसूस किया था । और मैंने पवित्र आत्मा की दिलासा को भी महसूस किया था ।

अपनी युवावास्था में एक बार फिर मैं उस प्रभुभोज सभा के दौरान महसूस किए गए उद्धारकर्ता के प्रेम और उसकी निकटता की अनुभूतियों को जगाना चाहता था । इसलिए मैंने एक अन्य आज्ञा का पालन किया । मैंने धर्मशास्त्रों में खोज की । उन में, मैं जानता था पवित्र आत्मा पाने के लिए मैं फिर से वापस जा सकता था कि जी उठे प्रभु के दोनों चेलों ने क्या महसूस किया था, जब उसने उनके घर आने और उनके साथ रहने का उनका निमंत्रण स्वीकार किया था ।

मैंने उसके सूली पर चढ़ाए जाने और दफनाए जाने के तीसरे दिन बाद के बारे में पढ़ा । विश्वासी स्त्रियां और दूसरे लोगों ने पत्थर को कब्र से दूर लुढ़का हुआ पाया और देखा उसका शरीर वहां नहीं था । वे वहां उससे प्रेम के कारण उसके शरीर को अभिषेक करने आये थे ।

दो स्वर्गदूत पास में खड़े थे और पूछा वे भयभीत क्यों थे, और कहा :

''तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूंढती हो ?

''वह यहां नहीं, परन्तु जी उठा हैः स्मरण करो कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा था ।

''कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे ।''4

मरकुस के सुसमाचार में वह स्वर्गदूतों से एक निर्देशन को जोड़ता हैः ''परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा; जैसा उन ने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे ।''5

प्रेरित और चेले यरूशलेम में एकत्रित हुए । जैसे हम भी हो सकते थे, वे भयभीत और आश्चर्यचकित थे जब वे मिल कर बात कर रहे थे कि मृत्यु और उसके पुनःजीवित होने की खबर का उनके लिए क्या अर्थ था ।

उस शाम उसके चेलों में से दो यरूशलेम से इम्माऊस को जा रहे थे । शाम के समय मार्ग में पुनःजीवित मसीह प्रकट हुआ और उनके साथ-साथ चला । पुनःजीवित प्रभु उनके पास आया था ।

लूका की पुस्तक उस शाम हमें उनके साथ चलने का अनुभव कराती हैः

''और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया ।

''लेकिन उनकी आंखे ऐसी बंद कर दी गईं थीं, कि वे उसे पहचान न सके ।

''और उसने उन से पूछा, क्या बातें हैं, जो तुम चलते चलते आपस में करते हो ? वे उदास से खड़े रह गए ।

''और यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नाम एक व्यक्ति ने कहा, क्या तुम यरूशलेम में अकेले परदेशी हो, जो नहीं जानता, कि इन दिनों उस में क्या हुआ है ?''6

उन्होंने उससे अपने दुख के विषय में बताया कि यीशु मर गया था जबकि वे भरोसा करते थे वह इस्राएल का मुक्तिदाता होगा । जी उठे प्रभु की आवाज में अवश्य ही लगाव रहा होगा जब वह इन दुखी और शोकित शिष्यों से बातें कर रहा था :

''तब उसने उन से कहा, हे निर्बुद्धियों, और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मंदमतियों :

''क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे ?

''तब उस ने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरंभ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया ।7

फिर वह क्षण आया जिसने जब मैं एक छोटा लड़का था तब से अबतक मेरे हृदय को जोश दिया है :

''और इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे, जहां वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा कि वह आगे बढ़ा चाहता है ।

''परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, कि हमारे साथ रह, क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है । तब वह उन के साथ रहने के लिये भीतर गया ।''8

उस रात उद्धारकर्ता ने इम्माऊस गांव के निकट उसके चेलों के घर में प्रवेश करने के निमंत्रण को स्वीकार किया था ।

वह उनके साथ भोजन पर बैठा । उसने रोटी ली, उसे आशीषित किया, उसे तोड़ा, और उसे उन्हें दिया । उनकी आंखें खुल गईं और वे उसे पहचान गए । तब तक वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गया था । लूका हमारे लिए उन आशीषित चेलों की अनुभूतियों को लिखता हैः ''और उन्होंने आपस में कहा, जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई ?''9

उसी समय, ये दोनों चेले ग्यारह प्रेरितों को जो उनके साथ हुआ था उसे बताने यरूशलेम वापस लौटे । उस क्षण उद्धारकर्ता फिर से दिखाई दिया ।

उसने उसके पिता के सब बच्चों को पापों और मृत्यु के बंधन को तोड़ने के लिए प्रायश्चित के उसके मिश्न की भविष्यवाणियों की समीक्षा की ।''और उन से कहा, यों लिखा है, कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा ।

''और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा ।

''और तुम इन सब बातों के गवाह हो ।''10

उद्धारकर्ता के शब्द हमारे लिए भी उतने ही सच्चे हैं जितने वे उसके चेलों के लिए तब थे । हम इन बातों के गवाह हैं । और वह आनंददायक जिम्मेदारी जो हमने अंतिम-दिनों के संतों का यीशु मसीह के गिरजे में बपतिस्मा लेकर स्वीकार की है वह हमें भविष्यवक्ता अलमा द्वारा सदियों पहले मॉरमन के जल में स्पष्ट कर दी गई थीः ''और ऐसा हुआ कि उसने उनसे कहाः देखो, यहां मॉरमन का जल है (क्योंकि वे ऐसा ही कहते थे) और अब, जबकि तुम परमेश्वर के बाड़े में आना चाहते हो, और उसके लोग कहलाना चाहते हो, और तुम एक दूसरे के बोझ उठाने में मदद करना चाहते हो, ताकि वे हल्के हो जाएं ;

''हां, और उनके दुख से दुखी होने को तैयार हो जो दुखी हैं, हां, और उन्हें दिलासा देना चाहते हो जिन्हें दिलासे की जरूरत है, और सभी मौकों पर और सभी बातों में, और सभी स्थानों में चाहे जहां भी तुम हो, यहां तक कि मृत्यु तक परमेश्वर के गवाह के रूप में खड़े होना चाहते हो, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा मुक्ति पा सको, और तुम्हारी गिनती प्रथम पुनरूत्थान पाने वालों में हो,

ताकि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त हो सके---

''अब मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम्हारे हृदयों की यही इच्छा है, तब प्रभु के नाम पर बपतिस्मा लेकर उसके सामने एक गवाह के रूप में कि तुमने उसके साथ अनुबंध किया है, के विरूद्ध तुम्हारे पास क्या कारण है, कि तुम उसकी सेवा करोगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे, ताकि वह तुम्हारे ऊपर अपनी आत्मा अधिकता से उंडेल सके ?

''और अब जब लोगों ने इन शब्दों को सुना, उन्होंने आनंदित होकर अपने हाथों से ताली बजाई, और चिल्लाएः यही हमारे हृदयों की इच्छा है ।''11

हमने अनुबंध बनाया है कि जब तक हम जीवित हैं हम जरूरतमंद की मदद करेंगे और उद्धारकर्ता के गवाह बनेंगे ।

हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम उद्धारकर्ता के लिए प्रेम और हमारे लिए उसके प्रेम को महसूस करते हैं । जब हम अपने बनाए अनुबंधों के प्रति विश्वासी रहते हैं, तो हम उसके लिए अपने प्रेम में वृद्धि को महसूस करेंगे क्योंकि हम उसकी शक्ति और उसकी सेवा में उसकी निकटता को महसूस करेंगे ।

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने हमें अक्सर प्रभु की उसके विश्वासी चेलों के लिए वादे को याद दिलाया हैः ''और जो कोई तुम्हें ग्रहण करता है, मुझे भी ग्रहण करता है, क्योंकि तुमसे पहले मैं वहां जाता हूं । मैं तुम्हारे दाएं और तुम्हारे बाएं होंगा, और मेरी आत्मा तुम्हारे हृदय में होगी, और मेरे स्वर्गदूत तुम्हारे चारों ओर तुम्हें थामे रहेंगे ।''12

एक अन्य तरीका है जिसमें आपने और मैंने उसे हमारे निकट आते हुए महसूस किया है । जब हम निष्ठा से उसकी सेवा करते हैं , वह उनके निकट आता है जिनसे हम अपने परिवार में प्रेम करते हैं । हर बार जब भी मुझे प्रभु की सेवा में बाहर जाने या मेरे परिवार को छोड़ने के लिए नियुक्त किया जाता है, मैंने देखा कि प्रभु मेरी पत्नी और मेरे बच्चों को आशीषित करता था । उसने प्रेम करने वाले सेवकों और मेरे परिवार को उसके निकट आने के मौकों को तैयार किया था ।

आपने उसी आशीष को अपने जीवन में महसूस किया है । आप में से बहुतों के प्रियजन अनंत जीवन के मार्ग से भटक गए हैं । आप चिंतित हैं कि उन्हें वापस लाने के लिए क्या करें । आप प्रभु पर भरोसा रखें, वह उनके पास जाता है जब आप विश्वास में उसकी सेवा करते हो ।आपको जोसफ स्मिथ और सिडनी रीगडन से प्रभु का वादा याद है जब वे उसके काम करने के लिए अपने परिवारों से दूर गए थेः ''मेरे मित्र सिडनी और जोसफ, तुम्हारा परिवार कुशल है; वे मेरे हाथों में हैं, और जो मुझे उचित लगेगा में उनके साथ करूंगा; क्योंकि मैं सर्वशक्तिमान हूं ।'' 13

अलमा और राजा मुसायाह की तरह, आप में से कुछ विश्वासी मां-बाप ने प्रभु की बहुत अधिक और अच्छी सेवा की है फिर भी उनके बच्चे प्रभु के लिए अपने मां-बाप के बलिदान के बावजूद भटक गए हैं । आपकी तरह, उन्होंने भी वह सब किया जो वे कर सकते थे लेकिन कोई फायदा नजर नहीं आया, यहां तक की अन्य प्रेमी और विश्वासी मित्रों से भी मदद ली ।

अलमा और उसके समय के संतों ने उसके बेटे और राजा मुसायाह के बेटों के लिए प्रार्थना की थी, एक स्वर्गदूत आया था । आपकी प्रार्थनाएं और उनकी प्रार्थनाएं जो विश्वास करते हैं, आपके परिवार के सदस्यों की मदद के लिए प्रभु के सेवकों को लाएंगी । वे परमेश्वर के घर का मार्ग चुनने में उनकी मदद करेंगे, चाहे शैतान और उसके अनुयायी, जिनका उद्देश्य परिवारों को इस जीवन में और अनंतता में नष्ट करना है, उन पर आक्रमण करते हैं ।

आप कनिष्ठ अलमा और मुसायाह के बेटों को उनके विद्रोह में स्वर्गदूत द्वारा बोले गए शब्दों को याद करो : ''और फिर, स्वर्गदूत ने कहाः देखो प्रभु ने अपने लोगों की प्रार्थनाओं, और अपने सेवकों की प्रार्थनाओं को भी सुना है, अलमा, जो कि तुम्हारा पिता है; क्योंकि उसने भारी विश्वास के साथ तुम्हारे संबंध में प्रार्थना की है कि तुम्हें सत्य का ज्ञान कराया जाए, इसलिए, परमेश्वर की शक्ति और अधिकार का तुम्हें विश्वास दिलाने के उद्देश्य से मैं आया हूं, कि उसके सेवकों की प्रार्थनाओं का उत्तर उनके विश्वास के अनुसार दिया जा सके ।''14

आप सब जो प्रभु से प्रार्थना और उसकी सेवा करते हो, उनसे मेरे वादा यह नहीं है कि आपको हर वह आशीष मिलेगी जो आप अपने स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए चाहते हैं । लेकिन मैं वादा कर सकता हूं कि उद्धारकर्ता आपके निकट आयेगा और आपको और आपके परिवार को वह आशीष देगा जो उत्तम होगी । जब आप अपने हाथ बढ़ाकर दूसरों की सेवा करते हो, आप उसके प्रेम की दिलासा और उसकी निकटता को महसूस करोगे । जब आप उनके घावों में मरहम लगाते हो जिनको जरूरत है और उसके प्रायाश्चित से उन्हें शुद्ध होने का मौका देते हो जो पाप में दुखी हैं, प्रभु की शक्ति आपको सहारा देगी । हमारे स्वर्गीय पिता के बच्चों को राहत और आशीष देने के लिए उसकी बाहें आपके परिवार सहित आपकी बाहों के साथ आगे बढ़ती हैं ।हमारे लिए शानदार घर-वापसी की तैयारी की गई है । हम उस प्रभु के वादे को पूरा होते देखेंगे जिससे हमने प्रेम किया है । वह उसके और हमारे स्वर्गीय पिता के साथ अनंत जीवन में हमारा स्वागत करता है । यीशु मसीह ने इसकी व्याख्या इस

तरह की है :''आगे बढ़ने और मेरे सिय्योन की स्थापना करने का प्रयास करो । सब कामों में मेरी आज्ञाओं का पालन करो । ''और, यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते और अतं तक सहनशील बने रहते हो तो तुम अनंत जीवन पाओगे, जोकि परमेश्वर का सर्वोत्तम उपहार है ।''15

''क्योंकि जो जीविते हैं पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और जो मर जाते हैं वे अपने परिश्रम से विश्राम पाएंगे, और उनके काम उनके साथ जाएंगे; और वे मेरे पिता के महल में मुकुट पाएंगे, जोकि मैंने उनके लिए तैयार किया है ।'' 16

मैं गवाही देता हूं कि आप आत्मा के द्वारा स्वर्गीय पिता के निमंत्रणः *''यह मेरा प्रिय पुत्र है । इसकी सुनो !''*17 का अनुसरण कर सकते हो ।

उसके शब्दों और उसके उदाहरण द्वारा, मसीह ने हमें दिखाया है उसके निकट कैसे आना है । स्वर्गीय पिता की प्रत्येक संतान जिसने बपतिस्मे के द्वारा से उसके गिरजे में प्रवेश किया है को उसके सुसमाचार से सीखने और उसके नियुक्त सेवकों से उसके निमंत्रण ''मेरे पास आओ''18 को सुनने का मौका मिलेगा ।

उसके प्रत्येक अनुबंधित सेवक को पृथ्वी पर उसके राज्य में और आत्मा के संसार में आत्मा से निर्देशन पाते हैं जब वे दूसरों को आशीष देते और सेवा करते हैं । और वे उसका प्रेम महसूस करेंगे, और उसके निकट आने का आनंद पाएंगे ।

मैं प्रभु के पुनरूत्थान की उतनी दृढ़ता से गवाही देता हूं मानो उस शाम मैं स्वयं उन दो चेलों के साथ इम्माऊस के निकट उस घर में था । मैं उतनी दृढ़ता से जानता हूं कि वह जीवित है जितनी दृढ़ता से जोसफ स्मिथ जानता था जब उसने पिता और पुत्र को पालमाइरा के उपवन में उस चमकदार सुवह के प्रकाश में देखा था ।

यह यीशु मसीह का सच्चा गिरजा है । केवल अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन को सौंपी गई पौरोहित्य कुंजियों में हमें अपने परिवारों में अनंतकाल तक स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के साथ रहने के लिए महुरबंद करने शक्ति है । हम न्याय के दिन उद्धारकर्ता के आमने-सामने खड़े होंगे । यह उनके लिए आनंद का समय होगा जो इस जीवन में उसकी सेवा करते हुए उसकी निकटता में गए हैं, वे इन शब्दों को सुनेंगे : ''धन्य है अच्छे और विश्वासयोग्य दास ।'' 19

मैं जीवित उद्धारकर्ता और हमारे मुक्तिदाता की यह गवाही देता हूं, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

विवरण

1. सिद्धांत और अनुबंध 88:63 ।
2. सिद्धांत और अनुबंध 6:20 ।
3. "Abide with Me; 'Tis Eventide," *Hymns,* no. 165 ।
4. लूका 24:5–7 ।
5. मरकुस 16:7 ।
6. लूका 24:15–18 ।
7. लूका 24:25–27 ।
8. लूका 24:28–29 ।
9. लूका 24:32 ।
10. लूका 24:46–48 ।
11. मुसायाह 18:8–11 ।
12. सिद्धांत और अनुबंध 84:88 ।
13. सिद्धांत और अनुबंध 100:1 ।
14. मुसायाह 27:14 ।
15. सिद्धांत और अनुबंध 14:6–7 ।
16. सिद्धांत और अनुबंध 59:2 ।
17. जोसफ स्मिथ---इतिहास 1:17 ।
18. मत्ती 11:28 ।
19. मत्ती 25:21 ।

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/12 । अनुवाद अनुमतिः 6/12 । 10665 294 का अनुवाद